शरीर को कहा जाता है विनाशी। अभी जो रावण राज्य है उसमें है देहअभिमान। देहीअभिमान नहीं (कि) मैं आत्मा हूँ, अमर हूँ। ये मेरा शरीर है, वो विनाशी है। मैं एक शरीर छोड़ करके दूसरा लेता हूँ। इसको कहा जाता है देहीअभिमानी। अभी बाप भी आ करके बच्चों को समझाते हैं कि बच्चे, अभी देहअभिमान छोड़ो। अभी मैं आया हुआ हूँ तुमको...। तुम जब वहाँ से आते हो तो अशरीरी आते हो।..जैसे तुम अशरीरी तैसे बाप भी अशरीरी। ठीक है ना। फिर तुम आते हो शरीर में तो फिर जीवआत्मा। अब तुम बच्चे जानते हो कि जीवआत्माएँ मनुष्य को कहा जाता है। पूजा भी की जाती है। इनकी जीवात्मा की भी पूजा की जाती है; क्योंकि वो पवित्र है जीवात्मा। अच्छा, एक सिर्फ है आत्मा, जिसको हम परमपिता परमात्मा..... वो निराकार है। उनकी पूजा होती है ज़रूर। उसको कहा भी जाता है शिवबाबा। तो बाबा से वर्सा ज़रूर मिलना चाहिए ना। बाबा ने समझा दिया है– एक मिलता है लौकिक बाप से हद का वर्सा। एक जन्म में बाप गया, दूसरा आया, फिर उनसे भी हद का वर्सा मिला। अभी ये है बेहद का बाप और तुम जानते हो बच्चे कि अभी हम आए हैं बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेने; क्योंकि तुमको बाप का भी परिचय मिला और फिर ये जो रचना है उसके आदि,मध्य,अंत का भी परिचय मिला। इसीलिए तुमको टाइटिल मिला– स्वदर्शन चक्रधारी। स्व माना आत्मा। ऐसे अपन से बात करनी होती है– मुझ आत्मा को परमपिता परमात्मा द्वारा सृष्टि चक्कर के आदि,मध्य,अंत का ज्ञान मिला, इस हिसाब से हम चक्रवर्ती राजा बनेंगे। देखो, कितना सहज है! चक्कर को जानने से...। किस द्वारा? हम बाप द्वारा। बाप बिगर कोई भी इस चक्कर के राज़ को नहीं जानते हैं। साधु,संत,सन्यासी, ये जो शास्त्र,वेद,ग्रंथ, कोई में भी इस चक्कर की नॉलेज नहीं है। तो बाप आ करके बच्चों को समझाते हैं कि मैं तुम बच्चों को इस रचना के आदि,मध्य,अंत...। अभी देखो, तुम सब जान चुके। बाप को जान चुके, आस्तिक बने। बाकी सारी दुनिया नास्तिक, न जानने वाले। तो प्रीत किससे करेंगे? तुम जानने वाले प्रीत करते हो। वो गाया जाता है ना– विनाशकाले प्रीत बुद्धि विजयन्ति यानी विजय पहनेंगे रूद्रमाला की और विष्णुमाला की। फिर विनाश काले विपरीत बुद्धि।...नाम ही रखा है प्रीत(विपरीत) बुद्धि। न बुद्धि कभी नहीं, एकदम विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति; क्योंकि बाप से बड़ी दुश्मनी है। .... भई क्या दुश्मनी है? बाप को गाली देते हैं। कैसे गाली देते हैं? बोलते हैं– .. परमात्मा 24 अवतार लेते हैं– कच्छ का, मच्छ का, वाराह का, फलाना का, सूअर का। अरे, ये तो गाली दे दिया। तो प्रीत कैसे होगी? ये प्रीत हुई? ये तो गालियाँ देने की बात हुई। फिर गाली से भी और जास्ती– ये ठिक्कर–2 में, भित्तर–2 में। देखो, कुछ भी नहीं रखा है एकदम। तो इसलिए कहा जाता है कि बच्चे पत्थरबुद्धि बन जाते हैं। ऐसे पत्थरबुद्धि बन जाते, कुछ भी समझ नहीं आता है। भगवान को पत्थर,ठिक्कर,भित्तर में समझते हैं। इसको कहा जाता है विपरीत बुद्धि और तुम बच्चों की है प्रीत बुद्धि। बाप से प्रीत बुद्धि है तो बाप से वर्सा मिलेगा ना। तो यहाँ आते हो ना। हम यहाँ आते हैं बेहद के बाप से... परमप्रिय परमपिता। उसको कहा जाता है परमप्रिय। अंग्रेज़ी में कहते हैं बिलवेड मोस्ट या मोस्ट बिलवेड। अरे भई, मोस्ट बिलवेड क्यों? देखो, बाप को तो इतना प्यार नहीं कर सकेंगे ना; क्योंकि जब दुःख होता है तो झट कहते हैं– ओ बाबा! आओ, हमारा दुःख हरो और हमको फिर दुःख हरकर सुख भी दो। तो देखो, तुम्हारा अभी दुःख हर करके तुमको सुख भी देते हैं, स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। देखो, अभी ऐसे बाबा कब देखा? हाँ, हम बाबा के सन्मुख कल्प–2 देखते हैं। तुम बच्चे इन आँखों से बाबा के सन्मुख बैठे हैं और बाबा को देख रहे हैं। शिवबाबा इन शरीर द्वारा इन आँखों से तुमको देखते हैं कि बच्चे हमारे अभी सन्मुख हुए हैं। बच्चे भी कहते हैं हमारा बेहद का बाप आ करके सन्मुख हुआ है। कैसे? इस शरीर में आ करके विराजमान हुआ है। इसलिए इस एक को ही बाप और दादा। दादा और बाप नहीं कहना चाहिए। ये भी भूल नहीं करना। बाप–दादा ; क्योंकि वर्सा मिलना है पहले नंबर वाले से। वो हो गया अलफ, ये हो जाते हैं फिर बे; क्योंकि ये रचना हो गई ना। तो हमेशा बापदादा इकट्ठा। अभी ये अक्षर कोई भी...। अभी है ज़रूर। ब्रह्मा के द्वारा प्रवेश करेगा तभी तो कहेगा ना। नहीं तो ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ कहाँ से आवें। तो देखो, बाप शिवबाबा बोलता है अभी– मैं इस ब्रह्मा द्वारा तुमको अपना बनाय ब्राह्मण बनाय और फिर देवता बनाऊँगा। अभी बच्चे भी जानते हैं हम ब्राह्मण बना। जो बाबा ने समझाया है ..... छोटेपन में वो... तुम छोटे तो हो ना बच्चे बाबा के। तो छोटे बच्चे खेल करते हैं ना! कोई बच्चा। अरे बच्चे, वो बाजोली जानते हो? बाजोली खेलो। बाजोली

समझते हो? .....फिर खेलो। हाँ, रुको। अभी कितना ज्ञान बाबा समझाते हैं अच्छी तरह से। पहले–2 चोटी, पीछे कहा जाता है मुख। तो तुम अभी ब्राह्मण हो, पीछे देवता बनेंगे। .....फिर क्षत्रिय बनेंगे, वैश्य बनेंगे, शूद्र बनेंगे, फिर ब्राह्मण बनेंगे। तो इसको कहा जाता है बाजोली। तुमको मालूम नहीं है कि जो फकीर लोग होते हैं, आगे जब यात्रा पर जाते थे, तो जैसे ये बाजोली है ना, ऐसे बाजोली खेलते–2 जाकर हरिद्वार में पहुँचते थे। कोई ऐसे भी खेलते थे, कोई सीधा सो करके, फिर वहाँ विश्राम करके, उठ करके वहाँ खड़ा रहेंगे, फिर सो जाएँगे। फिर निशान करेंगे। ऐसे करते–2 तुम... क्योंकि बोलते हैं मेहनत से जाएँगे ना यात्रा पर; क्योंकि हम यात्रा पर जाते हैं ना। किसकी यात्रा पर? किसको मिलने के लिए? बद्रीनाथ की यात्रा पर। बद्रीनाथ से मिलने जाते हैं यानी भगवान से मिलने जाते हैं। तो देखो, कितनी मेहनत करते हैं! कितनी तकलीफ होती है इनको बच्चे ! बहुत तकलीफ होती है। अभी यहाँ देखो तुमको कितना सहज मिलता है। बाप आते हैं। बोलते हैं– तुमको कुछ भी नहीं करना है। तुमको सिर्फ मुख से भी 'बाबा–2' नहीं करना है; क्योंकि 'बाबा–मम्मा' छोटे बच्चे करते हैं। पहले 'बाबा–मम्मा' सीखते हैं ना। तुमको ये मुख से कुछ नहीं कहना है। ...देखो, यहाँ बैठे हो ना। भले सुनते हो बैठ करके। तुम जानते हो भला अच्छा, शिवबाबा ऊपर से आ करके, इसमें प्रवेश करके, हमको ज्ञान दे करके फिर .. चला जाएगा। कहाँ? देखो, फिर घर जाएगा। ... सारा दिन थोड़े ही बैल पर सवारी करेगा। ऐसा कोई कायदा थोड़े ही है। ये चले जाते हैं। हाँ, इतना ज़रूर है वो जब चाहिए सेकेण्ड में इसमें आ सकते हैं। आत्मा बिल्कुल ही एक रॉकेट है, इसे सेकेण्ड में...। जबकि कहा जाता है सेकेण्ड में जीवनमुक्ति, उसका अर्थ क्या हुआ? सेकेण्ड में आत्मा एक .... दूसरे में जाती है। उनको टाइम नहीं लगता है। तैसे यहाँ भी बाप कहते हैं– अरे, तुम सेकेण्ड में बस शिवबाबा को पहचाना, उनके हुए, बस सेकेण्ड में तुम स्वर्ग के मालिक बने। एडॉप्ट किया, शिवबाबा का बने। तुमको मालूम है हम शिवबाबा का बनकर स्वर्ग का मालिक बनते हैं, सिर्फ यहाँ तो नहीं बनेंगे ना। बनेंगे तो नई दुनिया में। तो ज़रूर पुरानी दुनिया भी तो खलास होने तक तुमको सिर्फ लायक बनना है। ये लायक बनने के लिए फिर बोलते हैं अच्छा, मुझे याद करो तो लायक बन जाएँगे। नालायक कहा जाता है पतित को और लायक कहा जाता है पावन को; क्योंकि पतित, पावन को नमस्ते करते हैं। तो वो लायक हुआ, वो नालायक हुआ। फिर उसको लायक कहो या पावन कहो; उसको नालायक कहो या पतित कहो, बात एक ही रहती है समझाने के लिए। तो पवित्रता तो बहुत अच्छी है ना। बाबा ने समझाया है कि कन्याएँ पवित्र हैं तो माता–पिता भी नमस्ते करते हैं और जहाँ कि शादी हुई बिचारी को सब जगह में मत्था टेकना पड़ता है। कन्या को किसको भी, कोई भी सन्यासी वगैरह, कोई भी गुरु हो ना, कन्या को मत्था नहीं टेकने का होता है; क्योंकि वो तो पवित्र है। इसलिए गाया हुआ है भारत में, कन्या वो जो अपने कुल का, ये कुल है ना अपना.. 21 जन्म का उद्धार करे। तो बरोबर तुम एक–2, एक–2 को ज्ञान देकर उनको 21 जन्म के लिए स्वराज्य देती हो यानी उद्धार करती हो अथवा तुम एक–2 सैलवेशन आर्मी। सैलवेशन कहा जाता है डूबा हुआ बेड़ा, उसको पार करना। तुम एक–2 सैलवेशन आर्मी हो। तुम एक–2 का डूबा हुआ बेड़ा पार करती हो। देखो, कितने का पार... ये सब कहाँ से आए! ये आते हैं ना। तुम उनको ज्ञान दे करके, हर एक पण्डे में ज्ञान दे करके, डूबी हुई बेड़ी को पार लगाने के लिए देखो यहाँ ले आए हैं। तो तुम एक–2 इण्डिविजुअली, तुम एक–2 को नर से नारायण बनाने वाले। कितना ऊँच काम करती हो देखो तो। अभी क्या कोई जानते हो? ये कोई शास्त्रों में थोड़े ही है। गाया हुआ है बेशक कि कन्या वो...। वो कौन–सी कन्या? बेड़ा पार .... ज़रूर कोई पवित्र कन्या होगी। सो भी लौकिक तो हो नहीं सकेंगी। वो कोई परलौकिक बाप की कन्या होगी। तो देखो, हो ना परलौकिक बाप के बच्चे। वो कहते हैं ना– कुमारी और कुमार। किसके? शिवबाबा के ब्रह्मा द्वारा। तो खुशी होती है ना। देखो, ये बच्चियाँ प्रदर्शनी में क्या करती हैं? ये पुरुषार्थ कि कोई न कोई का हम बेड़ा पार कर देवें। तो बाप थोड़े ही एक खिवैया ठहरा। जैसा बाप वैसे बच्चे। तो बाप भी खिवैया और तुम मास्टर खिवैया। हर एक को पार जाने का रास्ता बताते हो। विषय सागर से क्षीर सागर जाने का। तो एक–2 को ना। अपन को एक–2 को समझाना है ना। हम कोई को भी, नर्कवासी को स्वर्गवासी बना सकते हैं। तुम्हारा धंधा ही ये हुआ। छीः–2! ''नर्कवासी'' देखो कितना गंदा अक्षर है बिल्कुल ही। हम नर्कवासी से, दुःखी से, सो भी कहा जाता है कलहयुगी नर्कवासी से हम मनुष्य को सतयुगी स्वर्गवासी बनाते हैं। तो देखो, स्वर्ग में सुख कितने हैं! तो बनना

चाहिए ना। नर्क में तो गोता नहीं खाना चाहिए ना। ....देखो, बाबा कितना सन्मुख देखते हैं। आँखें खोल करके बाबा कितना खुश होते हैं, अपने इन बच्चों को, जिनके लिए कहते हैं– बच्चे, अभी देखो तुम ... पड़े थे ना, काले थे ना। हम तुमको अभी गोरा बना रहे हैं। तुम्हारी आत्मा सांवरी है ना। हम तुमको फिर नया, गोरा बना रहे हैं। पुरानी दुनिया में बैठे हो ना। हम तुमको नई दुनिया में...। तुम यहाँ मृत्युलोक में बैठे हो ना। हम तुमको अमरलोक ले जाते हैं। अक्षर तो हैं ना। सब भक्तिमार्ग में काम में आते हैं। तो कोई ऐसा थोड़े ही– स्वर्गवासी, नर्कवासी, फिर अमरलोक, ये मृत्युलोक, ऐसा कोई नहीं जानते हैं। स्वर्ग बहुत याद है। स्वर्ग बहुत याद क्यों होता है? क्योंकि श्रीकृष्ण स्वर्ग का यानी वैकुण्ठ का...। वैकुण्ठ या स्वर्ग एक ही बात है। कोई कहते हैं कि वैकुण्ठवासी, कोई कहते हैं स्वर्गवासी। अभी ऐसा कभी कोई स्कूल होता है जो बैठ करके बच्चे कहें कि हम नर्कवासी से स्वर्गवासी बन रहे हैं अर्थात् मनुष्य से देवता बन रहे हैं। अभी इतने ढेर हैं, कितने हैं! अभी कोई गस्सा तो नहीं मारते हैं ना। तो विश्वास करना चाहिए ना। अगर पति भी कहे स्त्री को– हम अभी बाप से वर्सा लेते हैं स्वर्ग का तो स्त्री को मानना चाहिए ना पति को। पति कोई झूठ थोड़े ही बोलते हैं। तो पति को फॉलो करना चाहिए स्त्री को और जो स्त्री पति को फॉलो न करे, वो तो फॉलोअर नहीं ठहरी ना, वो पतिव्रता नहीं ठहरी। जो पति की आज्ञा में, सो भी अच्छी आज्ञा...। अभी श्रीमत पर पति कहते हैं– अभी हम पवित्र बनेंगे, तो पत्नी को भी... हम भी पवित्र बनेंगे; क्योंकि फॉलो करेंगे पति को। ऐसे नहीं हो सकता है कि पति कहे हम पवित्र बनेंगे, स्त्री कहें– नहीं, हम पतित रहेंगी। फिर उनको क्या कहेंगे? ..ये पतिव्रता तो नहीं ठहरीं ना। उसको पतिव्रता नहीं कहा जाता है, जो पति की शुभ आज्ञा न माने। यहाँ तो बाप कहते हैं कि बच्चे, अभी पवित्र रहना है; क्योंकि बाप कहते हैं पवित्र रहने से पवित्र दुनिया का मालिक बनेंगे। अर्थात् ये दुःख है यहाँ। बहुत दुःख है, बीमारी है...। देखो, कहते हैं ना..... ये बैठे–2 हार्टफेल हुआ, गिर पड़ा। ये बैठे–2 आधा अंग हो गया। देखो, होता है ना। दुःख का धाम है ना। बाप का वर्सा तो सुख का है ना। तो जब कोई को समझना होता है कि हम अभी...। कोई भी ऐसा दुनिया में नहीं है, कोई भी सतसंग में नहीं है, जो कोई कह सके कि हम नर्कवासी से स्वर्गवासी बन रहे हैं, स्वर्ग की स्थापना वाले बाप से। अभी ये बनावटी तो कोई बोल नहीं सके; क्योंकि दूसरे कोई को मालूम ही नहीं है। ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं है जिसको ये मालूम है या पता है सिवाय तुम्हारे। ये तुम कहते हो कि हम बरोबर नर्कवासी से स्वर्गवासी बन रहे हैं। किससे? जो स्वर्ग स्थापन करते हैं, जो हैविन स्थापन करते हैं। बाप का नाम हैविनली गॉड फादर है ना। अंग्रेजी में ऐसे कहते हैं और ये भी कहा जाता है रचता। रचता तो स्वर्ग का, बेहद का बाप भगवान कोई नर्क रचता है क्या! कभी रचें हैं ? ना। तो बाप स्वर्ग रचते हैं। रावण की मत पर मनुष्य नर्क रचते हैं। देखो, एक/दो को नर्कवासी बनाते रहते हैं। अभी तुम एक/दो को स्वर्गवासी बना रहे हो। फर्क देखो! तुम सबको पावन बनाय स्वर्गवासी बना रहे हो और दूसरे, जो भी मनुष्य हैं, सभी एक/दो को नर्कवासी बनाते जाते हैं; क्योंकि सीढ़ी उतर जाते हैं। तुम अभी सीढ़ी चढ़ने लगी। तुम सीढ़ी बहुत चढ़ी हुई हो। समझा ना। बाकी कितना है? दो/चार डाके होंगे मुश्किल। इतना सीढ़ी चढ़ आई हो... क्योंकि उनके साथ खुदाई खिदमतगार हो। तुम(ने) खुदाई खिदमतगारों का नाम सुना है, वहाँ पहाड़ों के तरफ में, अफ़गानिस्तान की तरफ में? वो खाली नाम है खुदाई खिदमतगार। अभी तुम जानते हो कि हम खुदाई खिदमतगार यानी ईश्वर के साथ खिदमत कर रहे हैं। किसकी? भारत की खास और सारी दुनिया की आम। क्या खिदमत कर रहे हो? इन सबको स्वर्ग बनाना है। देखो, किसको सपने में भी याद नहीं होता। कोई माताएँ शिवशक्ति क्या करती हैं! क्या किया था, अब क्या करती हैं! ...बाप को याद करो। अरे, अलफ को, बाप को याद किया, वर्सा ज़रूर याद आएगा। शिवबाबा को याद किया, स्वर्ग ज़रूर याद आएगा। इसलिए वो तो कहते हैं मन्मनाभव, मद्याजीभव। बाप तो कहते हैं– नहीं, मन्मनाभव यानी मुझे सिर्फ याद करो, तो स्वर्ग का मालिक तुम बनेंगे ज़रूर। बाप को याद करेंगे तो वर्सा ज़रूर मिलेगा। आगे हद के बाप को याद करते थे। अब बेहद के बाप को। आगे हद के साजन को, अभी ये बेहद का साजन। उनको याद करो, बेड़ा पार। अच्छा! ऐसे पुरुषार्थी ब्रह्मामुखवंशावली, देखो जो ब्राह्मण नहीं होगा वो शूद्र के कतार में है। ब्रह्मामुखवंशावली स्वदर्शनचक्रधारी सर्विसेबुल मीठे–2 बच्चों प्रति यादप्यार और गुडनाइट।